P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-XII*August-2015

छायावाद की मूल धारा में चेतना

संजीत
सहायक प्रोफेसर,
हिंदी विभाग,
अखिल भारतीय जाट सूरमा
स्मारक कॉलेज,
रोहतक, हरियाणा

सारांश

छायावाद की सीमा का निर्धारण करने से पूर्व प्र"न उठता है कि छायावाद का प्रवर्तक किसे माना जाए अथवा कौन सी प्रथम छायावादी रचना मानी जाए? इस संबंध में काफी विवाद है क्योंकि 1918–19 के आस–पास से हिन्दी कविता में एक पवृति का उन्मेष दिखाई पडता है। काव्य की इस नूतन धारा को छायावाद या स्वच्छन्दतावाद नाम से संबोधित किया गया। छायावाद मानव मुक्ति, व्यक्ति स्वातंत्रय, सौन्दर्य बोध, प्रेम परिकल्पना, भाव से सम्पन्न ऐसा साहित्य एवं प्रतीक, सृष्टि, नए छयं, अलंकार, शैली की दृष्टि एवं साहित्य में अपनी वि"ाष्ट छाप छोडी।

मुख्य शब्द : रहस्य एवं विस्मय की भावना, मानव एवं मानवतावाद, स्थूल के प्रति सूक्षम विद्रोह, विचारगत व शैलीगत वि"ोषता।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल भारत में इतिहास के बदलते हुए स्वरूप से प्रभावित था। स्वंतत्रता संग्राम और राष्ट्रीयता की भावना का प्रभाव साहित्य में भी आया। 1918–20 दिखाई पडता है। काव्य की इस नूतन धारा का छायावाद तथा स्वच्छतावाद छायावादी काव्य के लिए उपयुक्त शब्द है, क्योकि स्वच्छन्यतावाद अपनी अर्थ व्याप्ति में छायावाद को समाविष्ट कर लेता है। यह एक ओर भारतीय साहित्य से जुड जाता है तथा दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय काव्यधारा ''रोमान्टिसिज्म'' से भी ऐसी स्थिति में काव्य प्रवृति को छायावाद नाम से अभिहित करना ही अधिक संगत है। क्योकि 'निराला' जैसे कवि उसकी चाल ढाल में नव यौवनाओं की चेष्टा का प्रतिबिम्ब पाते है। उसके पत्तों की मर्मर या फूलों की गुनगुनाहट में उन्हें किसी बाला कि"ोरी के मधुर आलाप या अर्थ स्फूट हास्य की प्रति ध्वनि सुनाई पडती है।

''सोई थी
जाने कैसे प्रिय आगमन वह
नायक ने चूमे कपोल
डोल उठी बल्लरी की देह
जैसे हिंडौल।।''

छायावादी कवि एक नूतन लोकतांत्रिक चेतना से प्रेरित है, उनके अनुसार वह एक जीवन संस्कृति और द"ान दृष्टि का भी आकांक्षा है, वस्तुओं और जीवन के प्रति रहस्यात्मक दृष्टिकोण एवं पदार्थ के प्रति विस्मय, जिज्ञासा और कुतूहल तथा अपरिचय का भाव भी इन कवियों में भरपूर दिखाई देता है, इन कवियों में प्रकृति दृ"यों को अवलोकन करने का अंदाज आ"चर्यजनक है ऐसा लगता है जैसे दृ"य वस्तु को वे पहली बार देख रहे है। इन कवियों ने प्रकृति के केवल सुन्दर और कोमल रूप का ही वर्णन नहीं किया बल्कि उसके कठोर रूप का भी चित्रण किया है। स्वयं निराला तो सामंती प्रवृति के विरूद्ध उन्मुक्त विद्रोही रहे ह।

''अबे सुन वे गुलाब
भूलमत जो पाई खु"ाबू, रंगों आब
खून चूसा खाद् का तूने अ"ाष्ट
डाल पर इतरा ना है कैपिटलिस्ट''

छायावादी कविता या कवियों के सामाजिक चेतना के साथ–साथ एक अज्ञात सत्ता का बोध भी होता हैं। कवि जीवन की आ"ा–निरा"ा, सुख–दुख और जय पराजय में उस परम तत्व का ही रूप देखता है।

"जीवन की विषय, सब पराजय
चिर अतीत आशा, सुख सब मय,
सबमें तुम, तुममें सद तन्मय।।"

(निराला)

इस युग की काव्य धारा में हमें मनवतावाद का जय घोष भी सुनाई देता है। व्यक्ति की प्रतिष्ठा के साथ–साथ मानवीय महत्ता के गीत प्रायः सभी कवियों ने गाया है कवि पंत की धारणा नूतन मानवतावाद की कल्पना हैः–

''सुन्दर है विहग, सुमन सुन्दर
मानव ! तुम सबसे सुन्दरतम्''

छायावादी कवि नई चेतना और नई व्यवस्था के आकांक्षी थे और त्तकालीन यथास्थिति से उन्हें घोर असन्तोंष था। इसी क्रम में इन्होने यथास्थिति और वि"ाल ब्रह्मांड के मध्य एकता और समता ढूढनें वाली सौन्दर्य दृष्टि का उन्मेष किया। उनकी उदार मानवतावादी दृष्टि और स्वच्छन्द कल्पना से उनकी सौन्दर्य दृष्टि अनुप्रमाणित हुई। प्रत्येक छायावादी रचनाकार ने यद्यपि कुछ अ"ा तक रोमांटिक दृष्टिकोण से ही यथार्थ का साक्षात्कार किया। छायावादी कवि मध्ययुगीन सामंती रूढ़ियों से मुक्त होकर अपने व्यक्तित्व का स्वतन्त्र ढंग से विकास चाहते हैं। ''मैं'' शैली अपनाने पर वे इसलिए अधिक जोर देते है, क्योंकि छायावाद में विषय के स्थान पर विषयी प्रमुखता है अज्ञेय ने स्वीकार किया है।

''विषयी प्रधान दृष्टि ही छायावादी काव्य की प्राणशक्ति है।''

छायावाद की कल्पना संवेदनशीलता एवं भावप्रवणता

सभी उनके नीजत्व वाचक है। व्यक्तिनिष्ठता के कारण वे जड प्रकृतिचेतना का आरोप करते हुए मानवीकरण की द"ाा में उन्मुख होते है उन्होने वस्तु वर्णन के स्थान पर अनुभूति को गौरवान्वित किया है।

''तुमुल–कोलाहल कलह में
मैं हृदय की बात रे मन।''

कहने के पीछे यही रहस्य था। इसके साथ–साथ प्रसाद, पंत महादेवी वर्मा के भी काव्य में वि"वमानवता की पीडा एवं त्रासदी को लेकर आधन्त करूणा लक्षित होती है। पंत व निराला ने कहा हैः–

''तप रे मधुर–मुधर मन
वि"व वेदना में तप प्रतिपल।''

छायावादी कवि शैली और अभिव्यक्ति प्रणाली के क्षेत्र में भी नवीनता लेकर आए। उनकी खु"ाी मे भी नवीनता लेकर आए। उनकी खडी बोली ने भाषा की व्याख्या का युगानुकूल नूतन श्रृंगार किया। उसे आधुनिक युगीन मानव की विविध गुम्फित एवं असंगतिमयी अन्तर्विरोधिनी यनः स्थितियों के प्रका"ान में समर्थ बनाया। उन्होने मर्त को अर्मूत रूप में और अर्मूत को मूर्त में चित्रित करने के लिए अनेकों उपमानों को अपनाया।

मूर्त के लिए अमूर्त उपमान

''बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल''

अमूर्त के लिए मूर्त उपमान

''कीर्ति किरन भी नाच रही है''

इस युग ने कवियों के कारण हिंदी की अभिव्यंजना शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

उपसंहार

कहते है कि अब छायावाद का पतन हो गया है प्रसाद की मृत्यु के प"चात् ऐसा कोई दृढ़ व्यक्ति छायावाद के पास नही रहा जो इसके नेतृत्व को संभाल सके।

निराला विदा हो गये, महादेवी जो पीड़ा की कवियित्री थी, वे अब नहीं रही, पंत ने पहले ही वाद परिवर्तन कर लिया। लेकिन ध्यान देने योग्य व्यक्तव्य है कि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। मेरा ऐसा विश्वास है कि सौन्दर्य और प्रेम की जिस अक्षय निधि को लेकर छायावादी चला था, वह किसी एक युग, एक देश या सभी महान कलाकारों ने इसी प्रकार सम्पदा के संचयन द्वारा अपनी प्रतिभा का प्रतिफलन किया। व्यापक मानवतावाद का आदर्श किसी भी युग में धूमिल नहीं हो सकता। भले ही छायावादी कवि इस धरती पर न हों, किन्तु व्यापक आदर्श एवं मानवतावाद तथा सूक्ष्म सौन्दर्य को लेकर चलने वाला छायावाद अब भी अजर एवं अमर है। छायावादी प्रतिभा आज भी हृदय को भाव–विभोर कर देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. निराला के "परीमल" महाकाव्य ।